ASTRO ARPITA NATH

27 नक्षत्रों की बुनियादी बातें

Arpita Nath द्वारा · मध्यवर्ती ज्योतिष नोट्स · 2026-07-23

जबकि पश्चिमी ज्योतिष मुख्य रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि आपके जन्म के दिन सूर्य कहाँ स्थित था, वहीं वैदिक ज्योतिष (ज्योतिष) **27 नक्षत्रों** (जिन्हें "चंद्र भवन" भी कहा जाता है) के माध्यम से आपके व्यक्तित्व, भाग्य और आध्यात्मिक मार्ग की कहीं अधिक सटीक रूपरेखा उजागर करता है। नक्षत्र चंद्रमा के परिक्रमा पथ के आधार पर 360-डिग्री के राशि चक्र को 13° 20' के 27 अलग-अलग भागों में विभाजित करते हैं। यह विस्तृत और त्वरित मार्गदर्शिका सभी 27 नक्षत्रों, उनके स्वामी ग्रहों, प्रतीकात्मक अर्थों और प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करती है।

27 नक्षत्र और उनकी मुख्य विशेषताएं

1. अश्विनी (0°00' - 13°20' मेष)

- **स्वामी ग्रह**: केतु
- **प्रतीक**: घोड़े का सिर
- **मुख्य लक्षण**: तीव्र, ऊर्जावान, अग्रणी, सहज, उपचारात्मक स्वभाव। नई शुरुआत में कूदने के लिए हमेशा तैयार।

2. भरणी (13°20' - 26°40' मेष)

- **स्वामी ग्रह**: शुक्र
- **प्रतीक**: योनि (स्त्री जननांग)
- **मुख्य विशेषताएं**: भावुक, परिवर्तनकारी, रचनात्मक, तीव्र, सुरक्षात्मक। जन्म, विकास और सहनशीलता से जुड़ा हुआ।

3. कृतिका (26°40' मेष - 10°00' वृषभ)

- **स्वामी ग्रह**: सूर्य
- **प्रतीक**: उस्तरा (छुरा) या अग्नि की लौ
- **मुख्य विशेषताएं**: तीक्ष्ण, महत्वाकांक्षी, स्पष्टवादी, शुद्ध करने वाले, अत्यधिक एकाग्र। सत्य तक पहुँचने के लिए नकारात्मकता को काट देते हैं।

4. रोहिणी (10°00' - 23°20' वृषभ)

- **स्वामी ग्रह**: चंद्रमा
- **प्रतीक**: रथ या बरगद का पेड़
- **मुख्य विशेषताएं**: आकर्षक, कलात्मक, व्यावहारिक, भौतिकवादी, प्रभावशाली। सुंदरता, आकर्षण और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध।

5. मृगशिरा (23°20' वृषभ - 6°40' मिथुन)

- **स्वामी ग्रह**: मंगल
- **प्रतीक**: हिरण का सिर
- **मुख्य विशेषताएं**: जिज्ञासु, बेचैन, विश्लेषणात्मक, अन्वेषी, मौलिक। ज्ञान और अनुभव के निरंतर खोजी।

6. आर्द्रा (6°40' - 20°00' मिथुन)

- **स्वामी ग्रह**: राहु
- **प्रतीक**: आंसू की बूंद या हीरा
- **मुख्य विशेषताएं**: तीव्र, भावुक, बौद्धिक, परिवर्तनकारी। भावनात्मक तूफानों का अनुभव करते हैं जो महत्वपूर्ण सफलताओं की ओर ले जाते हैं।

7. पुनर्वसु (20°00' मिथुन - 3°20' कर्क)

- **स्वामी ग्रह**: गुरु (बृहस्पति)
- **प्रतीक**: तरकश (बाणों से भरा)
- **मुख्य विशेषताएं**: पोषण करने वाला, आशावादी, लचीला, क्षमाशील, बुद्धिमान। असफलताओं के बाद फिर से संभलने की क्षमता के लिए जाना जाता है।

8. पुष्य (3°20' - 16°40' कर्क)

- **स्वामी ग्रह**: शनि
- **प्रतीक**: गाय का थन या कमल
- **मुख्य विशेषताएं**: अत्यधिक आध्यात्मिक, देखभाल करने वाले, सुरक्षात्मक, धैर्यवान, स्थिर। आध्यात्मिक उन्नति के लिए व्यापक रूप से सबसे शुभ नक्षत्रों में से एक माना जाता है।

9. आश्लेषा (16°40' - 30°00' कर्क)

- **स्वामी ग्रह**: बुध
- **प्रतीक**: कुंडलित सर्प
- **मुख्य विशेषताएं**: सहज ज्ञान युक्त, रणनीतिक, रहस्यमयी, अत्यंत सम्मोहक, तीक्ष्ण बुद्धि। असाधारण रूप से तीव्र अंतःप्रेरणा और मनोवैज्ञानिक गहराई।

10. मघा (0°00' - 13°20' सिंह)

- **स्वामी ग्रह**: केतु
- **प्रतीक**: शाही सिंहासन

• **मुख्य विशेषताएं**: राजसी, स्वाभिमानी, नेतृत्व-उन्मुख, पारंपरिक, पैतृक जड़ों और विरासत से जुड़े हुए।

11. पूर्वा फाल्गुनी (13°20' - 26°40' सिंह)

• **स्वामी ग्रह**: शुक्र

• **प्रतीक**: बिस्तर के आगे के पाए या झूला (हैमॉक)

• **प्रमुख विशेषताएं**: आनंदमय, रचनात्मक, शांत, मिलनसार, विलासिता-प्रेमी। रिश्तों, आराम और कला पर केंद्रित।

12. उत्तरा फाल्गुनी (26°40' सिंह - 10°00' कन्या)

• **स्वामी ग्रह**: सूर्य

• **प्रतीक**: बिस्तर के पिछले पैर

• **मूल विशेषताएं**: विश्वसनीय, उदार, सम्मानित, समाज के प्रति समर्पित। सेवा करने, प्रतिबद्धताओं को निभाने और स्थिरता स्थापित करने की इच्छा से प्रेरित।

13. हस्त (10°00' - 23°20' कन्या)

• **स्वामी ग्रह**: चंद्रमा

• **प्रतीक**: खुला हाथ या मुट्ठी

• **मुख्य विशेषताएं**: हाथों के हुनर में निपुण, हाजिरजवाब, साधन संपन्न, बारीकियों पर ध्यान देने वाले, अनुकूलनशील। शिल्प कौशल, उपचार (हीलिंग) और चतुराई से समस्याओं को सुलझाने के लिए बेहतरीन।

14. चित्रा (23°20' कन्या - 6°40' तुला)

• **स्वामी ग्रह**: मंगल

• **प्रतीक**: चमकता हुआ रत्न या मोती

• **मुख्य विशेषताएं**: कलात्मक, चुंबकीय, डिज़ाइन पर केंद्रित, गतिशील, करिश्माई। सुंदरता और दृश्य संरचना के निर्माण के लिए पसंद किए जाने वाले।

15. स्वाति (6°40' - 20°00' तुला)

• **स्वामी ग्रह**: राहु

• **प्रतीक**: हवा में झूलता हुआ छोटा पौधा

• **मुख्य विशेषताएं**: स्वतंत्र, कूटनीतिक, लचीले, स्वतंत्रता-प्रेमी, व्यापार और संवाद में कुशल।

16. विशाखा (20°00' तुला - 3°20' वृश्चिक)

• **स्वामी ग्रह**: गुरु (बृहस्पति)

- **प्रतीक**: तोरण द्वार (विजय मेहराब) या कुम्हार का चाक
- **मुख्य गुण**: लक्ष्य-उन्मुख, दृढ़, प्रतिस्पर्धी, महत्वाकांक्षी, एकाग्रचित्त। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करते हैं।

17. अनुराधा (3°20' - 16°40' वृश्चिक)

- **स्वामी ग्रह**: शनि
- **प्रतीक**: कमल या विजय तोरण (विजय मेहराब)
- **मुख्य विशेषताएं**: समर्पित, मिलनसार, लचीले, आध्यात्मिक, निष्ठा और साझेदारी के माध्यम से कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने में सक्षम।

18. ज्येष्ठा (16°40' - 30°00' वृश्चिक)

- **शासक ग्रह**: बुध
- **प्रतीक**: गोल ताबीज या कुंडल (कान की बाली)
- **मुख्य गुण**: सुरक्षात्मक, प्रभावशाली, स्वाभिमानी, तीव्र, सहज ज्ञान युक्त। प्रियजनों की रक्षा करने की तीव्र भावना के साथ स्वाभाविक नेता।

19. मूल (0°00' - 13°20' धनु)

- **शासक ग्रह**: केतु
- **प्रतीक**: जड़ों का बंधा हुआ गुच्छा
- **मुख्य विशेषताएं**: खोजी, क्रांतिकारी, परिवर्तनकारी, गहन विचारक। हर परिस्थिति के मूल कारण की तह तक जाता है।

20. पूर्वाषाढ़ा (13°20' - 26°40' धनु)

- **स्वामी ग्रह**: शुक्र
- **प्रतीक**: सूप (अनाज फटकने वाला पंखा) या हाथी का दांत
- **मुख्य विशेषताएं**: अजेय, आशावादी, दार्शनिक, प्रभावशाली। गहरा आंतरिक आत्मविश्वास और दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

21. उत्तरा आषाढ़ा (26°40' धनु - 10°00' मकर)

- **शासक ग्रह**: सूर्य
- **प्रतीक**: हाथी का दांत या छोटा बिस्तर
- **मुख्य लक्षण**: धर्मपरायण, धैर्यवान, अत्यधिक अनुशासित, सहनशील। दीर्घकालिक उपलब्धि और सार्वभौमिक न्याय पर केंद्रित।

22. श्रवण (10°00' - 23°20' मकर)

- **शासक ग्रह**: चंद्रमा
- **प्रतीक**: तीन पदचिह्न या कान
- **मुख्य गुण**: उत्कृष्ट श्रोता, विद्वान, चौकस, बुद्धिमान, मिलनसार व संवादात्मक। सीखने की ललक और मौखिक परंपराओं से प्रेरित।

23. धनिष्ठा (23°20' मकर - 6°40' कुंभ)

- **स्वामी ग्रह**: मंगल
- **प्रतीक**: ढोल (मृदंग) या बांसुरी
- **मुख्य विशेषताएं**: संगीतप्रेमी, धनवान, प्रभावशाली, लयबद्ध, मिलनसार। समय की समझ (टाइमिंग), संगीत और समूह की गतिविधियों से स्वाभाविक रूप से जुड़ाव होता है।

24. शतभिषा (6°40' - 20°00' कुंभ)

- **स्वामी ग्रह**: राहु
- **प्रतीक**: खाली वृत्त या 100 चिकित्सक
- **मूल लक्षण**: रहस्यमय, विश्लेषणात्मक, दूरदर्शी, उपचार-उन्मुख। चिकित्सा, तकनीक और एकांत के प्रति गहरा लगाव।

25. पूर्व भाद्रपद (20°00' कुंभ - 3°20' मीन)

- **शासक ग्रह**: गुरु (बृहस्पति)
- **प्रतीक**: तलवार या दो सिर वाला मनुष्य
- **मुख्य विशेषताएं**: विलक्षण, उत्साही, तीव्र, आध्यात्मिक, अपरंपरागत। गहरी रहस्यमय गहराई और परिवर्तनकारी प्रेरणा से युक्त।

26. उत्तरा भाद्रपद (3°20' - 16°40' मीन)

- **शासक ग्रह**: शनि
- **प्रतीक**: गहरे पानी में जुड़वाँ या शव-शय्या (अर्थी का पिछला भाग)
- **मुख्य गुण**: शांत, बुद्धिमान, दयालु, ध्यानमग्न, आत्म-नियंत्रित। स्वाभाविक गहराई और गहन चिंतन के प्रति स्वाभाविक झुकाव।

27. रेवती (16°40' - 30°00' मीन)

- **स्वामी ग्रह**: बुध
- **प्रतीक**: मछली या ढोलक (मृदंग)
- **मुख्य विशेषताएं**: सौम्य, संवेदनशील (सहानुभूतिपूर्ण), कल्पनाशील, सुरक्षात्मक, कलात्मक। यह राशि चक्र की अंतिम यात्रा की पूर्णता का प्रतीक है।

ये 27 नक्षत्र केवल नाम या लेबल नहीं हैं - वे एक ऐसा गतिशील दृष्टिकोण हैं जिसके माध्यम से आप अपनी स्वाभाविक शक्तियों, भावनात्मक पहलुओं और जीवन के अनुभवों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। जैसे-जैसे आप वैदिक ज्योतिष को समझना जारी रखेंगे, याद रखें कि आपका चंद्र नक्षत्र केवल एक शुरुआती बिंदु है। ग्रहों के गोचर, आपके लग्न नक्षत्र, और वर्तमान दशा चक्र ये सभी मिलकर आपकी अनूठी ब्रह्मांडीय कहानी की रचना करते हैं।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/27-nakshatras/

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।